खण्ड-11, अंक-1, वर्ष-2023, मु0प्र0 97-103
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v11i1.14
SJIF (2023) : 8.124

शोध समीक्षा

Importance of medicinal plants: From ancient era to modern age

Reetu Sangwan
Department of Chemistry, B.S.N.V.P.G. College (K.K.V.)
Charbagh, Lucknow-226 001, U.P., India
ritnikrana@gmail.com

Received: 31-08-2023, Accepted: 20-10-2023

Abstract- India has a wide variety of medicinal plants and herbs in the world. These plants have been used for medicinal purpose long before prehistoric period. Plants synthesize hundreds of chemical compounds for various functions, including defense and protection against insects, fungi, diseases and herbivorous mammals. Contemporary science has acknowledged their active action and it has included in modern pharmacotherapy. A range of drugs of plants origin known by ancient civilizations used throughout the millennia. This article covers the usage, form and importance of these medicinal plants in ancient time and the chemical constituents of these plants used in present time such as Ephedra, earlier was a source of anti-fatigue drink. In later period it became a drink of immortality and longevity. It has a long history of medicinal use in China and India to treat colds, fever, headaches, and coughing, wheezing, and other conditions. In modern time ephedrine, alkaloid used as a decongestant drug obtained from plants of the genus *Ephedra*.

Keywords- Herbal, drugs, CAM approach

औषधीय पौधों का महत्वः प्राचीन युग से आधुनिक काल तक

रीतू सांगवान
रसायन विज्ञान विभाग, बी.एस.एन.वी.पी.जी. कॉलेज (केकेवी)
चारबाग, लखनऊ–226 001, यू0पी0, भारत
ritnikrana@gmail.com

सार– सम्पूर्ण विश्व में भारतीय औषधीय पौधों और जड़ी–बूटियों की व्यापक विविधता है। इन पौधों का उपयोग प्रागैतिहासिक काल से बहुत पहले से ही औषधीय प्रयोजन के लिए किया जाता रहा है। पौधे विभिन्न कार्यों के लिए सैकड़ों रासायनिक यौगिकों का संश्लेषण करते हैं, जिनमें कीड़ों, कवक, बीमारियों और शाकाहारी स्तनधारियों से बचाव और सुरक्षा शामिल है। समसामयिक विज्ञान ने इनकी सक्रिय क्रिया को स्वीकार किया है और इसे आधुनिक फार्माकोथेरेपी में शामिल किया है। प्राचीन सभ्यताओं द्वारा ज्ञात पौधों की उत्पत्ति की दवाओं की एक श्रृंखला जिसका उपयोग सहस्राब्दियों से किया जा रहा है। यह लेख प्राचीन समय में इन औषधीय पौधों के उपयोग, रूप और महत्व और वर्तमान समय में उपयोग किए जाने वाले इन पौधों के रासायनिक घटकों जैसे इफेड्रा, जो पहले थकान–विरोधी पेय का एक स्रोत था, को सम्मिलित करता है। बाद के समय में यह अमरता और दीर्घायु का पेय बन गया। सर्दी, बुखार, सिरदर्द और खांसी, घरघराहट और अन्य स्थितियों के उपचार के लिए चीन और भारत में इसके औषधीय उपयोग का एक लंबा इतिहास है। आधुनिक समय में एफेड्रिन, एल्कलॉइड का उपयोग डिकॉन्गेस्टेंट दवा के रूप में किया जाता है जो कि एफेड्रा जीनस के पौधों से प्राप्त होता है।

बीज शब्द– हर्बल, औषधिया,सीएएम दृष्टिकोण

1. **परिचय–** भारत ने एक सुप्रसिद्ध स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली का निर्माण किया है जहाँ पारंपरिक दवाएं प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आयुर्वेद या आयुर्वेदिक चिकित्सा, एक स्वस्थ जीवन शैली प्रणाली है जिसका उपयोग भारत में लोग 5,000 से अधिक वर्षों से करते आ रहे हैं। आयुर्वेद के अनुसार, प्रकृति के पाँच तत्व (अंतरिक्ष, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी) शरीर में तीन घटकों (दोष) के रूप में संयोजित होते हैं जिन्हें वात, पित्त और कफ के रूप में जाना जाता है। ये दोष प्रकृति के मूल तत्वों और शरीर के विशिष्ट कार्यों से निकटता से संबंधित हैं। सर्वोत्तम स्वास्थ्य के लिए इन दोषों का संतुलन आवश्यक माना जाता है। लगभग 90% आयुर्वेदिक औषधियाँ पौधों पर आधारित होती हैं। ऐसे पौधों से बनी शास्त्रीय आयुर्वेदिक उत्पादों को संस्कृत में ''योग'' के रूप में जाना जाता है। इष्टतम प्रभाव प्राप्त

करने के लिए पौधों के संयोजन के वर्षों के व्यावहारिक अनुभव के बाद योग विकसित हुआ है। हर्बल औषधीय पौधों से उपचार भी एक सशक्त आधार है क्योंकि इन पौधों को सुरक्षित माना जाता है और इनका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता है। चूँकि वे प्रकृति के साथ तालमेल बिठाते हैं, इसलिए वे रासायनिक रूप से उपचारित उत्पादों और सिंथेटिक दवाओं पर अधिक लाभ रखते हैं। अन्य दवाओं और दवाओं के विपरीत, आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों/पौधों पर आधारित दवाएं बीमारी का जड़ से इलाज करने के लिए जानी जाती हैं और इस प्रकार आपको लंबे समय तक स्वस्थ और फिट रखने में सहायता करती हैं। प्राकृतिक उत्पाद न केवल पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली के लिए बल्कि आधुनिक चिकित्सा के लिए भी रीढ़ की हड्डी हैं, क्योंकि कई आधुनिक दवाएं प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त होती हैं।

सर्वकालिक महान वैज्ञानिक, बहु–प्रतिभाशाली व्यक्तित्व और भारतीय गणराज्य के 11वें राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने भी पारंपरिक रूप से उपयोग किए जाने वाले औषधीय पौधों के उपयोग के प्रति अपनी गहरी रुचि दिखाई। एथनोफार्माकोलॉजी की 12वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस, ''डायनामिक्स ऑफ एथनोफार्माकोलॉजी'' में अपने संबोधन में उन्होंने प्रकृति की चेतना और कानून पर जोर दिया। उन्होंने प्राचीन भारतीय चिकित्सा प्रणाली यानी आयुर्वेद के लाभों और मूल्य पर भी जोर दिया।[1] पारंपरिक आयुर्वेदिक ग्रंथों में कहा गया है कि गुणवत्ता–सुनिश्चित आयुर्वेदिक यौगिक बीमारी से लड़ने के लिए पर्याप्त मजबूत और शक्तिशाली है। उपयोग के लिए चुने गए पौधों के भाग भी महत्वपूर्ण हैं। संबंधित पौधों और इसमें सम्मिलित चिकित्सीय संयोजनों के आधार पर, पौधे की पत्तियां, फूल, बीज, छाल, जड़ें या त्वचा को चुना जा सकता है। अधिकतम प्रभाव प्राप्त करने के लिए आवश्यक घटकों के व्यापक व्यावहारिक अनुभव से चुने गए विशेष संयोजन का परिणाम है।[2,3]

पारंपरिक आयुर्वेदिक पाठ सारंगधर संहिता, जो 1300 ईस्वी का है, इस प्राचीन चिकित्सा प्रणाली में पॉलीहर्बलिज्म की अवधारणा पर प्रकाश डालता है।[4] जबकि व्यक्तिगत पौधों के सक्रिय फाइटोकेमिकल घटक अच्छी तरह से स्थापित हैं, वे आम तौर पर केवल थोड़ी मात्रा में उपस्थित होते हैं और इस प्रकार, वांछित चिकित्सीय प्रभाव प्राप्त करने के लिए अपर्याप्त होते हैं।[5] आयुर्वेदिक पौधों को प्रायः सुरक्षित और दुष्प्रभावों से मुक्त माना जाता है, जो हमेशा सच नहीं होता है। क्योंकि एकल पौधों से बने सांद्रित उत्पाद, अधिकतर चाय या गोलियों के रूप में, पौधों के अर्क से बने होते हैं जिनमें कई घटक होते हैं जो कुछ दुष्प्रभाव पैदा कर सकते हैं। चरक संहिता में कहा गया है कि आयुर्वेदिक दवाओं को तैयार करने या अनुचित तरीके से उपयोग करने पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।[6] वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक औषधीय पौधों के जानकारी की संख्या में धीरे–धीरे वृद्धि हुई है, जिसमें अधिक संख्या में देशी औषधीय पौधों के साथ–साथ विदेशी पौधे भी सम्मिलित हो गए हैं। चरक संहिता उन कारकों पर जोर देती है, जिन पर फॉर्मूलेशन के घटकों का चयन करते समय विचार किया जाना चाहिए, जिसमें पौधों का निवास स्थान, जिस मौसम में वे बढ़ते हैं, प्रचलित कटाई की स्थिति, भंडारण की चयनित विधि और फार्मास्युटिकल प्रसंस्करण की चुनी हुई विधि शामिल है।[7]

2. **आयुर्वेद में औषधि प्रशासन की विधियाँ–** आयुर्वेद और पारंपरिक आधुनिक चिकित्सा में औषधि प्रशासन के तरीके अलग–अलग हैं। उत्तरार्ध में, अधिकांश दवाएं सिंथेटिक हैं और इनका प्रशासन पेट और आंत पर प्रभाव डालता है। इस प्रकार अधिकांश पारंपरिक दवाएँ भोजन के बाद दी जाती हैं। आयुर्वेद में रोगी की प्रकृति, रोग और रोग की स्थिति के अनुसार दवा का समय बताया गया है। आयुर्वेदिक औषधियों का सेवन भी खाली पेट किया जाता है। चूँकि बाद की तैयारियां पौध–आधारित हैं, इसलिए वे धीमी गति से काम करती हैं। आयुर्वेदिक पौधों की तैयारी का अवशोषण सामान्य चयापचय के हिस्से के रूप में होता है। आयुर्वेदिक औषधियाँ विभिन्न स्वरूपों में उपस्थित हैं, जिनमें काढ़ा, पाउडर, पेस्ट, किण्वित उत्पाद, गोलियाँ और औषधीय मक्खन (घी) शामिल हैं। उपयोग किए गए प्रारूप, चाहे तरल पदार्थ, पेस्ट या टैबलेट, तैयारियों की प्रभावकारिता से जुड़े हुए हैं। यदि प्रारूप बदल दिया जाता है, तो वांछित प्रभाव खो सकता है और संभावित दुष्प्रभाव उत्पन्न हो सकते हैं। सामग्री के रूप में उपयोग किए जाने वाले पौधों के भाग भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। संस्कृत में, इन प्राकृतिक उत्पादों को अनुपान कहा जाता है। ये प्राकृतिक उत्पाद किसी भी दुष्प्रभाव को कम करने में भी मदद करते हैं। आयुर्वेद की तैयारी का समय भी रोग विशेष और उसकी स्थिति के अनुसार अलग–अलग होता है।

3. **पारंपरिक हर्बल औषधियाँ–** कुल मिलाकर, आज किसी भी श्रेणी में उपयोग में आने वाली आधी दवाएं 35,000 से अधिक पौधों से आती हैं। अनुमान है कि चीन में वर्तमान में 140 नई दवाओं का उपयोग किया जा रहा है, जो या तो सीधे पौधों से निकाली गई हैं या रासायनिक रूप से संशोधित हैं। पारंपरिक हर्बल दवा की खोज के लिए पौधों या जड़ी–बूटियों के चयन को संचालित करती है। गोल्डथ्रेड कॉप्टिस चिनेंसिस (*Coptis chinensis*) नामक पौधे से प्राप्त बर्बेरिन (Berberine), प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक मधुमेह, कैंसर, अवसाद, उच्च रक्तचाप और हाइपरकोलेस्ट्रोलेमिया जैसी स्थितियों के उपचार में प्रयोग किया जाता है। औषधीय के रूप में पहचाने जाने वाले पौधों के रसायन, आधुनिक अनुसंधान उपकरणों का उपयोग करके सीसा यौगिकों की खोज की ओर ले जाते हैं, जो उनकी संरचना, संरचना और जैव सक्रियता को स्पष्ट करते हैं। बाइसाइक्लोल (हेपेटाइटिस के उपचार के लिए उपयोग), आर्टीमिसिनिन (मलेरियारोधी), कोडीन (एनाल्जेसिक, एंटीट्यूसिव), विन्क्रिस्टाइन (एंटीट्यूमर, एंटील्यूकेमिक), थियोफिलाइन (मूत्रवर्धक, ब्रोन्कोडिलेटर), थियोब्रोमाइन (मूत्रवर्धक, वैसोडिलेटर) कुछ पौधे आधारित दवाएं हैं जिनका प्राचीन काल से उपयोग किया जाता है। कुछ औषधीय पौधों पर आधारित औषधियों की सूची उनके चिकित्सीय उपयोगों के साथ **तालिका–1** में दी गई है।

तालिका–1 औषधीय पौधों से पृथक औषधियाँ और उनके चिकित्सीय उपयोग				
क्र.सं.	**पौधे का नाम**	**उपयोग**	**पौधे का भाग**	**आधुनिक औषधियाँ**
1.	एफेड्रा	केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (सीएनएस) उत्तेजक	स्टेम्स	एफेड्रिन
2.	अफीम पोस्ता	दर्द निवारण और अवैध मनोरंजन	बीज	मॉर्फिन
3.	कॉफी बीन्स, चाय की पत्तियाँ, कोको की फलियाँ, कोला नट्स,	थकान और माइग्रेन	बीज, फल और पत्तियाँ	कैफीन
4.	एरिथ्रोक्सीलोन कोका	एनेस्थीसिया	पत्ती	कोकीन
5.	सिनकोना लेजरियाना (कुनैन का पेड़)	मलेरियारोधी, ज्वरनाशक	छाल	कुनैन
6.	सिनामोमम कैम्फोरा (कपूर का पेड़)	रूबेफेसिएंट	पत्तियां, जड़ और तना	कपूर

4. **सामान्य भारतीय औषधीय पौधे और जड़ी–बूटियाँ**

4.1 **आमलकी (फिलैन्थस एम्ब्लिका लिन)**– भारतीय चिकित्सा में दवा और टॉनिक के रूप में आमलकी के व्यापक उपयोग का वर्णन किया गया है और औषधीय पौधे को भारत के आयुर्वेदिक फार्माकोपिया में शामिल किया गया है। इस पौधे का उपयोग हाइपरएसिडिटी, गैस्ट्रिटिस, एनोरेक्सिया, गर्भावस्था के दौरान उल्टी और क्रोनिक एसिड पेप्टिक रोग से जुड़े एनीमिया में किया जाता है। अमलकी पाउडर का उपयोग पोषक तत्वों की कमी, गर्भावस्था और पुरानी बीमारियों में विटामिन सी के प्राकृतिक पूरक के रूप में भी किया जा सकता है।[8]
4.2 **दारुहरिद्रा (बर्बेरिस अरिस्टाटा डी.सी.)**– दारुहरिद्रा का उपयोग सदियों से नेत्रश्लेष्मलाशोथ जैसी सामान्य नेत्र रोगों में रोगनिरोधी और उपचारात्मक उद्देश्यों के लिए (आई ड्रॉप/मलहम के रूप में किया जाता रहा है। बर्बेरिन, बर्बामाइन, एरोमोलिन, कराचिन, पामिटाइन, ऑक्सीकैंथिन और ऑक्सीबरबेरीन जैसे अल्कलॉइड इस पौधे के मुख्य रासायनिक घटक हैं।[9]
4.3 **हरीतकी (टर्मिनलिया चेबुला रेट्ज)**– हरीतकी पाउडर इसके सूखे पके फलों से बना एक सरल मिश्रण है। शरीर की नाड़ियों (पाठा पर इसके लाभकारी प्रभाव के कारण इस पौधे को पथ्या नाम भी दिया गया है। इसका उपयोग न केवल कब्ज के लिए बल्कि विभिन्न गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल और प्रणालीगत समस्याओं के लिए भी किया जाता है। वैज्ञानिक अध्ययनों ने इसकी पेट संबंधी, रेचक और पेट फूलने–रोधी क्रियाएं स्थापित की हैं।[10]
4.4 **लहसुन(एलियम सैटिवम लिन)**– इसका उपयोग मुख्य रूप से चेहरे के पक्षाघात, लॉक–जबड़े, पेट फूलना, पेट का दर्द, जोड़ों का दर्द और दंत क्षय के लिए किया जाता है। लहसुन के तेल का उपयोग त्वचा पर चकत्ते और कान की बूंद के रूप में किया जाता है। ताजा लहसुन में सूजन–रोधी, फफूंद–रोधी, बैक्टीरियल एंटीवायरल और कृमिनाशक गुण होते हैं।[11]

5. **पूरक और वैकल्पिक चिकित्सा (सीएएम दृष्टिकोण)**– अधिकांश बुनियादी चिकित्सा प्रक्रियाओं, दवाओं और टीकों की कम उपलब्धता के कारण विकासशील देशों में 80 प्रतिशत से अधिक लोगों के बीच पूरक और वैकल्पिक प्रथाएं लोकप्रिय हैं। आयुर्वेद में साक्ष्य–आधारित अनुसंधान को भारत और विदेशों में बड़ी स्वीकृति मिल रही है।[12–15] चिकित्सा के इस क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए संयुक्त राज्य संघीय सरकार की प्रमुख एजेंसी के रूप में राष्ट्रीय पूरक और वैकल्पिक चिकित्सा केंद्र का उद्घाटन किया गया है। पूरक और वैकल्पिक प्रथाएं पश्चिमी चिकित्सा दृष्टिकोण के सहायक या विकल्प हैं। यह माना जाता है कि इन दृष्टिकोणों के उपयोगकर्ता उन्हें चुनते हैं क्योंकि वे पारंपरिक उपचारों या प्रणालियों की तुलना में सस्ते हैं। यद्यपि, कई अध्ययनों से पता चला है कि सीएएम दृष्टिकोण की लागत समान स्थितियों के लिए पारंपरिक उपचारों की तुलना में समान या अधिक है इस प्रकार, लोग लागत के अलावा अन्य कारणों से उनकी तलाश करते हैं। एक और अवधारणा यह है कि गरीब लोग पारंपरिक चिकित्सा का उपयोग करने की अधिक संभावना रखते हैं, लेकिन यह हमेशा सच नहीं होता है। आजकल लोग सीएएम तकनीक की तलाश करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि दुष्प्रभाव कम होंगे। विकसित और विकासशील दोनों देशों में, पूरक तरीकों के उपयोगकर्ता भी आमतौर पर पारंपरिक देखभाल की तलाश करते हैं।[16] कुछ महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक हर्बल फॉर्मूलेशन[17] **तालिका–2** में सूचीबद्ध हैं।

प्राचीन काल से उपयोग किये जाने वाले सबसे सामान्य भारतीय औषधीय पौधे		
 ***Cardiospermum halicacabum* Linn.** संस्कृत नामः कर्णस्फोटा हिंदी नामः कनफूटी उपयोगः खांसी, ब्रोंकाइटिस, अस्थमा, गले में खराश, त्वचा रोग	 ***Centella asiatica*** संस्कृत नामः मंडूकपर्णी हिंदी नामः ब्रह्मा–मांडूकी उपयोगः मानसिक सतर्कता में सुधार, मस्तिष्क टॉनिक	 ***Coccinia grandis*** संस्कृत नामः बिम्बी हिंदी नामः कुंदरू उपयोगः पीलिया और मधुमेह
 Ocimum sanctum संस्कृत नामः तुलसी हिंदी नामः तुलसी उपयोगः बुखार, सामान्य सर्दी और कीट प्रतिरोधी	 ***Piper longum* Linn.** संस्कृत नामः पिप्पली हिंदी नामः पीपल उपयोगः क्रोनिक ब्रोंकाइटिस, अस्थमा, कब्ज, भूख न लगना	 ***Withania somnifera*** संस्कृत नामः अश्वगंधा हिंदी नामः असगंध उपयोगः मस्तिष्क को शांत करना, सूजन कम करना, रक्तचाप कम करना और प्रतिरक्षा प्रणाली में बदलाव लाना

साभार–अंतरजाल

तालिका 2

भारत में पारंपरिक आयुर्वेदिक प्रणाली में अधिकांशतः उपयोग किए जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण हर्बल फॉर्मूलेशन

क्र. सं.	पारंपरिक आयुर्वेदिक फॉर्मूलेशन की सामग्री / अनुपात	मात्रा / उपयोग की विधि / रोग
1	*शतावरी रेसमोसस* ((जड़ें) /20 प्रतिशत *विथानिया सोम्निफेरा* ((जड़ें) /20 प्रतिशत *फाइलेंथस एम्बलिका* ((फल)/ 15 प्रतिशत *पी. अमरस* (पत्तियां) /10 प्रतिशत *टेफ्रोसिया पुरप्यूरिया* ((पत्ते)/ 10 प्रतिशत *प्लंबैगो जेलेनिका* ((जड़ें)/ 5 प्रतिशत *ग्लाइसीराइजा ग्लबरा* ((जड़ें) /15 प्रतिशत *पाइपर लोंगम* ((फल)/ 5 प्रतिशत	➢ 4 ग्राम चूर्ण दिन में दो बार पानी के साथ रोगी को दिया जाता है। ➢ एनीमिया में उपयोग किया जाता है।

2	*पाइपर लोंगम* ((फल) /10 प्रतिशत *एस. जैंथोकार्पम* ((पूरा पौधा) /15 प्रतिशत *विथानिया सोम्नीफेरा* ((जड़ें) /10 प्रतिशत *टर्मिनलिया चेबुला* ((फल) /10 प्रतिशत *टी. बेलेरिका* ((फल) /10 प्रतिशत *करकुमा जेडोएरिया* ((जड़ें)/ 15 प्रतिशत *फिलेन्थस एम्ब्लिका* ((फल) /15 प्रतिशत *रिकिनस कम्युनिस* ((जड़ें) /15 प्रतिशत	➢ रोगी को 4 ग्राम मिश्रित चूर्ण अदरक के रस के साथ दिन में दो बार (सुबह और शाम, भोजन से एक घंटा पहले देना चाहिए। ➢ गठिया में उपयोग किया जाता है।
3	*आजादिराक्टा इंडिका* ((छाल)/20 प्रतिशत *बाउहिनिया वेरिएगाटा* ((छाल) /15 प्रतिशत *क्रेटेवा नूरवला* ((छाल) /15 प्रतिशत *टर्मिनलिया चेबुला* ((फल) /15 प्रतिशत *टी. बेलेरिका* ((फल) /10 प्रतिशत *होलारिना एंटीडिसेंटरिका* ((छाल) /10 प्रतिशत *टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया* ((तना) /15 प्रतिशत	➢ 4 ग्राम मिश्रित चूर्ण को गुनगुने शहद के साथ दिन में दो बार (सुबह और रात रोगी को देना चाहिए। ➢ कैंसर को ठीक करने के लिए उपयोग किया जाता है।
4	*टर्मिनलिया चेबुला* ((फल)/ 20 प्रतिशत *अजाडिराक्टा इंडिका* ((छाल) /20 प्रतिशत *होलारेना एंटीडिसेंटरिका* ((छाल) /10 प्रतिशत *टर्मिनलिया बेलेरिका* ((फल)/ 10 प्रतिशत *विथानिया सोम्नीफेरा* ((जड़ें)/ 20 प्रतिशत *टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया* ((तने) /20 प्रतिशत	➢ 4 ग्राम मिश्रित (एक चम्मच चूर्ण दिन में दो बार (सुबह–शाम पानी के साथ रोगी को दें। ➢ सिस्ट के उपचार में उपयोग किया जाता है।
5	*जम्नेमा सिल्वेस्ट्रे* ((पत्तियां)/ 30 प्रतिशत *टीनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया* ((तना) /15 प्रतिशत *एजाडिराक्टा इंडिका* ((पत्तियां)/ 10 प्रतिशत *फिलेन्थस एम्ब्लिका* ((फल) /20 प्रतिशत *करकुमा लोंगा* ((जड़ें) /10 प्रतिशत *एगल मार्मेलोस* ((पत्ते) /15 प्रतिशत	➢ 4 ग्राम मिश्रित चूर्ण दिन में दो बार पानी के साथ रोगी को देना चाहिए। ➢ मधुमेह में उपयोग किया जाता है।
6	*ग्लाइसीराइजा ग्लबरा* ((जड़ें) /20 प्रतिशत *टर्मिनलिया चेबुला* ((फल)/ 20 प्रतिशत *टी. बेलेरिका* ((फल) /15 प्रतिशत *टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया* ((तने) /15 प्रतिशत *एजाडिरेक्टा इंडिका* ((पत्तियाँ)/ 15 प्रतिशत *विथानिया सोम्नीफेरा* ((जड़ें) /15 प्रतिशत	➢ 3 ग्राम मिश्रित चूर्ण दिन में दो बार पानी के साथ रोगी को देना चाहिए। ➢ फिस्टुला के इलाज के लिए उपयोग किया जाता है
7	*एक्लिप्टा अल्बा* ((पत्ते) /15 प्रतिशत *सेंटेला एशियाटिका* ((पत्ते) /15 प्रतिशत *टर्मिनलिया चेबुला* ((फल) /10 प्रतिशत *टी. बेलेरिका* ((फल) /10 प्रतिशत *फिलेन्थस एम्बलिका* ((फल) /15 प्रतिशत *ग्लाइसीराइजा ग्लबरा* ((जड़ें) /15 प्रतिशत *टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया* ((तने)/ 10 प्रतिशत	➢ रोगी को 4 ग्राम मिश्रित चूर्ण शहद के साथ दिन में दो बार दें। ➢ बालों की समस्याओं में उपयोग किया जाता है।
8	*होलारेना एंटीडिसेंटेरिका* ((छाल) /10 प्रतिशत *मेन्था पिपेरिटा* ((पत्ते) /10 प्रतिशत *टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया* ((तने)/ 20 प्रतिशत *ब्यूटिया मोनोस्पर्मा* ((बीज)/ 20 प्रतिशत *एजाडिराक्टा इंडिका* ((पत्तियाँ))/10 प्रतिशत *फिलेन्थस एम्ब्लिका* ((फल) /20 प्रतिशत *ट्रिबुलस टेरेस्ट्रिस* ((फल) /10 प्रतिशत	➢ 3 ग्राम मिश्रित चूर्ण दिन में दो बार (सुबह और रात पानी के साथ रोगी को दें। ➢ पेट के कीड़ों के इलाज के लिए उपयोग किया जाता है।

9	*होलारेना एंटीडिसेंटेरिका* ((छाल) /10 प्रतिशत *एक्लिप्टा अल्बा* ((पत्ते) /20 प्रतिशत *टेफ्रोसिया पुरप्यूरिया* ((पत्ते) /20 प्रतिशत *टीनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया* ((तने)/ 10 प्रतिशत *एजाडिरेक्टा इंडिका* ((छाल) /10 प्रतिशत *फिलेन्थस अमारस* ((पूरा पौधा)/ 20 प्रतिशत *प्लम्बैगो जेलेनिका* ((जड़ें) /10 प्रतिशत	➢ 4 ग्राम मिश्रित चूर्ण दिन में दो बार भोजन से आधा घंटा पहले पानी के साथ रोगी को दिया जाता है। ➢ लीवर टॉनिक के रूप में उपयोग किया जाता है।
10	*साइपरस रोटंडस* ((जड़ें)/ 10 प्रतिशत *टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया* ((तना)/ 20 प्रतिशत *एजाडिरेक्टा* इंडिका ((छाल) /20 प्रतिशत *टर्मिनलिया चेबुला* ((फल) /10 प्रतिशत *टी. बेलेरिका* ((फल) /10 प्रतिशत *करकुमा लोंगा* ((जड़ें) /10 प्रतिशत *फिलेंथस एम्ब्लिका* ((फल) /10 प्रतिशत *सेंटेला एशियाटिका* ((पत्ते) /10 प्रतिशत	➢ 3 ग्राम चूर्ण रोगी को भोजन से पहले दिन में दो बार पानी के साथ देने से एलर्जी की समस्या ठीक हो जाती है। ➢ त्वचा रोगों के इलाज के लिए उपयोग किया जाता है।

6. **निष्कर्ष**– औषधीय पौधे प्राकृतिक यौगिकों की उपस्थिति के कारण औषधीय गुणों वाले अणुओं का प्रमुख स्रोत प्रदान करते हैं। औषधीय पौधे मानव रोगों को ठीक करने के लिए उपयोगी होते हैं और फाइटो–रासायनिक घटकों की उपस्थिति के कारण उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुसब्बर, हल्दी, तुलसी, काली मिर्च, इलाइची और अदरक जैसे औषधीय पौधों का उपयोग आमतौर पर कई आयुर्वेदिक घरेलू उपचारों में किया जाता है और वैदिक युग से आधुनिक युग तक बीमारियों से लड़ने में सबसे अच्छा सहायक माना जाता है।

References

1. Tiwari D.(2020)European Journal of Molecular & Clinical Medicine, vol. 07(07).
2. Jagetia, G. C., Baliga, M.S., Malagi, K. J., Sethukumar Kamath M. (2002) Phytomedicine,vol. 9, pp.99–108.
3. Jagetia, G. C., Malagi, K. J., Baliga, M. S., Venkatesh, P., Veruva, R.R. Triphala (2004)J. Altern Complement Med., vol. 10, pp. 971–978.
4. Srivastava, S., Lal, V. K., Pant, K. K. (2013) Phytopharmacology, vol. 2, pp. 1–15
5. Parasuraman, S., Thing, G. S., Dhanaraj, S. A. (2014)Pharmacogn Rev., vol. 8, no. 16, pp. 73-80.
6. Dey, Y.N., Kumari, S., Ota, S., Srikanth, N. (2013) Int. J. Nutr. Pharmacol. Neurol. Dis., vol. 3, pp. 3–10.
7. Chopra, A., Doiphode, V. V. (2002) Med. Clin. North Am., vol. 86, pp. 75–89.
8. The Ayurvedic Pharmacopoeia of India. Ministry of Health & Family Welfare, Department of Indian Systems of Medicine & Homeopathy, New Delhi, India, Reprinted Edition, (2001) Part I, vol. I, pp. 5-6.
9. Sharma, P. C., Yelne, M. B., Dennis, T. J. (2000) Database on medicinal plants used in Ayurveda, vol. 1. New Delhi: Central Council for Research in Ayurveda and Siddha, pp. 121.
10. India, Ministry of Health and Family Welfare. The Ayurvedic pharmacopoeia of India. Part I. vol. I. New Delhi: Department of Indian Systems of Medicine & Homeopathy, (2001), pp. 47.
11. Billore, K. V.(2004) Data base on medicinal plants used in Ayurveda, vol. VI. New Delhi: Central Council for Research in Ayurveda and Siddha, p. 158.
12. Mashelkar, R. A. (2008) "Second world Ayurveda congress (theme: Ayurveda for the future)—inaugural address: part III," Evidence-Based Complementary and Alternative Medicine, vol. 5, no. 4, pp. 367–369.
13. Cooper, E.L. (2008) "Ayurveda is embraced by eCAM," Evidence-Based Complementary and Alternative Medicine, vol. 5, no. 1, pp. 1–2.
14. Cooper, E. L. (2008) "Ayurveda and eCAM: a closer connection," Evidence-Based Complementary and Alternative Medicine, vol. 5, no. 2, pp. 121–122.
15. Joshi, K., Ghodke, Y., Patwardhan, B. (2011) "Traditional medicine to modern pharmacogenomics:

Ayurveda Prakriti type and CYP2C19 gene polymorphism associated with the metabolic variability," Evidence-Based Complementary and Alternative Medicine, vol. 5, Article ID 249528.

16. Debas, T. H., Laxminarayan, R., Straus, S. E. (2006) "Complementary and alternative medicine," in Disease Control Priorities in Development Countries, pp. 1281–1291, Oxford University Press, New York, NY, USA, 2nd edition.
17. Narayana A, Subhose V (2005) "Standardization of Ayurvedic, formulations: a scientific review," Bulletin of the Indian Institute of History of Medicine, vol. 35, no. 1, pp. 21–32.